thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 71 अंक : 37
सृष्टि संवत् 1960853115
21 दिसम्बर 2014
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–71, अंक : 37, 18/21 दिसम्बर 2014 तदनुसार 6 पौष सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द

ले० श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

भारत में अनेक दिव्य पुरूषों ने जन्म लिया। किसी ने धर्म के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग किया, किसी ने देश के लिए, किसी ने जाति के लिए अपना जीवन लगा दिया। परन्तु देश, धर्म संस्कृति, सभ्यता, राष्ट्रीय शिक्षा आदि समग्र क्षेत्रों में संतुलित एवं सर्वाग्रणी किसी का स्वरूप है तो वह अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का है। वह धार्मिक नेता थे और राष्ट्र नेता भी। वह सामाजिक नेता थे और आध्यात्मिक नेता भी थे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने जिस गुरूकुल शिक्षा प्रणाली को स्थापित किया था उससे पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली का खोखलापन प्रकट हो गया था और भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन को जन्म दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी एक पूर्ण नेता थे। सम्पूर्ण क्रान्ति के प्रतीक थे। उनके समकालीन नेता एकदेशी थे, उनमें समग्र गुण नहीं थे। वीरता अदम्य उत्साह, बलिदान उनके रोम-रोम में व्याप्त थे। निर्भयता की भावना, वाणी में अपूर्व ओज, दीन दुखियों के प्रति दया की भावना स्वामी श्रद्धानन्द में सदा दृष्टिगोचर होती थी।

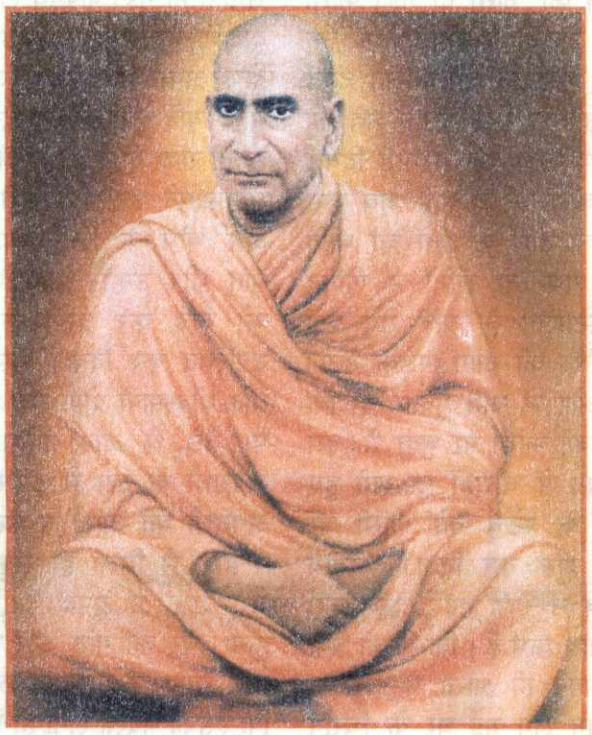

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ब्रिटिश शासन काल में दिल्ली के चांदनी चौक में क्रूर अंग्रेजी शासक के सैनिकों की संगीनों के सामने अपनी छाती दिखाकर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने आपको बलि के रूप में प्रस्तुत करके देश के प्रति जनता में बलिदान करने की भावना जागृत की। साहस एवं निर्भीकता का ऐसा उदाहरण अपूर्व था। स्वामी श्रद्धानन्द जी महात्मा थे, ऋषि थे, तपस्वी थे और योगी थे। उन्होंने देश का भविष्य देखा। तत्कालीन नेताओं की तुष्टिकरण की नीति और ब्रिटिश शासन की कूटनीति को अन्तर्दृष्टि से देखा। भारत की राष्ट्रीयता का भविष्य खण्डित प्रतीत हुआ तो भारत में एक राष्ट्रीयता के संगठन के लिए एक जाति, एक धर्म, एक भाषा के प्रचार के लिए शुद्धि आन्दोलन एवं शुद्धि का कार्य प्रारम्भ किया। सम्प्रदायवाद से भारत में देशद्रोही और गद्दार व्यक्तियों का बहुल होने के कारण भारत अखण्ड़त नहीं रह सकेगा, इसी के लिए भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के रक्षार्थ उन्होंने शुद्धि का कार्य प्रारम्भ किया था। यदि देश के अन्य नेता भी स्वामी श्रद्धानन्द जी का साथ देते तो भारत का विभाजन नहीं होता। महात्मा गांधी जी यद्यपि बहुत वर्षों बाद कुछ समझे परन्तु उनमें शुद्धि कार्य का साहस उत्पन्न नहीं हुआ, तथापि उन्होंने हरिजन उद्धार आन्दोलन शुरू किया।

भारत की राष्ट्रीय भावना की रक्षा के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने एक धर्म, एक भाषा, एक जाति, ऊंच नीच समभाव, गरीब अमीर भेद शून्य समभाव की जो महती रूपरेखा प्रसारित की थी उसी को विशेष रूप से स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि कार्य के द्वारा क्रियान्वित किया था। आज उसी आन्दोलन को राष्ट्रीय स्तर पर चलाना चाहिए।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान शुद्धि कार्य के कारण हुआ। यह राष्ट्र कार्य के लिए बलिदान था और धर्म कार्य के लिए भी था। अतः यह बलिदान इतिहास में अपूर्व था। इसलिए धार्मिक एवं राष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों में स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम अमर रहेगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने राष्ट्रीयता के निर्माण के लिए स्वधर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए अपने प्राचीनमय इतिहास की रक्षा एवं प्रचार के लिए भारतीयों को सच्चे अर्थों में भारतीय बनाने के लिए तथा जन्म जातिगत भेदभाव गरीब और अमीर का भेदभाव मिटाकर सबको समान स्तर पर लाने के लिए जिस आदर्श गुरूकुल को जन्म दिया था, उसने मैकाले की शिक्षा पद्धति का प्रखरता से बिना शासन से सहायता लिए प्रबल सामना किया।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस 23 दिसम्बर को मनाया जा रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देश, धर्म और जाति के लिए अपना बलिदान दिया था। उन्होंने अपने हित को त्यागकर राष्ट्रहित को अपनाया। मुन्शीराम से महात्मा मुन्शीराम और महात्मा मुन्शीराम से स्वामी श्रद्धानन्द तक का उनका सफर बहुत ही प्रेरणादायक है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाते हुए हम भी उनके आदर्शों, उनके कार्यों को अपने जीवन में अपनाएं। प्रतिवर्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस आता है और हम प्रतिवर्ष मनाते हैं परन्तु अगर हम भी मानवता के लिए कार्य करना चाहते हैं, राष्ट्र के लिए कुछ करना चाहते हैं तो स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जो मार्ग दिखाया है, उस मार्ग पर चलना पड़ेगा। आज राष्ट्र को फिर से स्वामी श्रद्धानन्द जैसे ओजस्वी, तेजस्वी और निर्भीक सन्यासी की आवश्यकता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान राष्ट्र को मार्गदर्शन प्रदान करता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि देते हुए सरदार वल्लभ भाई पटेल लिखते हैं कि-स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद आते ही 1919 का दृश्य मेरी आँखों के सामने खड़ा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी में है स्वामी जी छाती खोलकर सामने हो जाते हैं और कहते हैं, लो चलाओ गोलियां। उनकी उस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता? मैं चाहता हूं कि उस वीर सन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे। ऐसे वीर, ओजस्वी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाते हुए हम भी उनके जीवन से प्रेरणा लें। उस महामानव के मानवता के लिए पथ प्रदर्शक कार्यों को आगे बढ़ाएं तभी उनका बलिदान दिवस मनाना सार्थक हो सकता है।

thearyasamaj.org

स्वाध्याय के लाभ

ले० स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

न कहीं राग न कहीं द्वेष, न मारकाट न युद्ध न आतंक। यदि परस्पर में पैदा हुए वैर को ही शांत कर लिया जाए उसे फिर न उभारा जाए, फिर न भड़काया जाए, पुराने मुर्दे न उखाड़े जाए, जो बात हो गई सो हो गई, बीति ताई विसार दो आगे की सुध लो-की नीति अपनाई जाए। आर्यों में वर्ष की समाप्ति पर होली पर्व मनाया जाता है। सब लोग परस्पर मिलकर रंगोली खेलते हैं गले मिलते है और कहते हैं सब गिला गुस्सा खत्म, जो बात होली जो होली करो। यही आर्यों का परमशील है इसी पर भारतीय संस्कृति ठहरीं हुई है। राम-रावण-युद्ध में लंकाधिपति रावण राम के हाथों मारा गया, युद्ध समाप्त हो गया। श्रीराम ने लक्ष्मण, अंगद, सुग्रीव, हनुमान आदि को बुलाकर कहा कि अब एक काम शेष रह गया है-लंकाधिपति रावण का अन्त्येष्टि संस्कार। वह एक देश का राजा था; अतः उसका अन्तिम संस्कार राजाओं के अनुरूप करवाना शेष है। तुम सभी नगर में जाओ और उसके शव का अन्त्येष्टि संस्कार विधिपूर्वक करवाओ। लक्ष्मण आदि को यह बात कैसे सह्य हो सकती थी लक्ष्मण अपने स्वभावानुरूप बोले आप क्या कह रहे है। जिस दुष्ट ने भगवती सीता का अपहरण किया, नाहक में युद्ध छेड़ लिया, इतना नरसंहार किया, कराया फिर भी आप कहते है कि उसका विधिपूर्वक अंतिम संस्कार कराओ। सड़ने दो उस दुष्ट के शव को, नोचने दो चील कौवों कुत्तों और शृगालों को, पेट भरने दो वन्य जन्तुओं को। राम जो कि समुद्र की तरह गंभीर थे, मुस्कुरा कर बोले-भइया अब शव से क्या वैर है जब उसमें आत्मा निवास करता था, तब उसका आचरण निन्दनीय था उसका दण्ड उसे दे दिया- मरणान्तानि वैराणि निवृत्तं नः प्रयोजनम्। मृत्यु तक ही वैर है, उसके पश्चात् समाप्त। हमारा प्रयोजन पूर्ण हुआ, अब शव से क्या वैर ? यदि मेरे वनवास का समय पूर्ण हो गया होता और नगर में प्रवेश कर सकता तो मैं स्वयं अन्तिम संस्कार में सम्मिलित होता। अब प्रशान्त वैर को क्या भड़काना, पुराने मुर्दों को क्या उखाड़ना। इसी शील पर भारतीय संस्कृति टिकी हुई है। यह हमारी संस्कृति का आधार है, बुनियादी पत्थर है। इस पर बना हुआ संस्कृति भवन हजारों तूफानों और अन्धड़ों में भी अडिग रहा है। सर इकबाल को भी लिखना पड़ा-कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, बरसों रहा है दुश्मन दौरे-ज़मां हमारा। एक ओर यह उदात्त चरित्र हो, और दूसरी ओर एशिया के महान् देश रूस का दृश्य है। स्टालिन से मृत्यु के पश्चात् जैसे ही रूस के राष्ट्र की बागडोर खुश्चोव और बुलगानिन के हाथों में आई, उन्होंने सर्वप्रथम यह निर्णय लिया कि स्टालिन ऐसा क्रूर और आततायी शासक था कि उसको फांसी की सज़ा दी जानी चाहिए थी। आदेश हुआ कि उसकी लाश को कब्र में से निकाला जाए और चौराहे पर फांसी दी जाए। अन्ततः स्टालिन के शव को फांसी दी गई। फांसी देकर उनको संतोष हुआ कि उन्होंने स्टालिन को उचित दण्ड दे दिया और पुनः उसके शव को साधारण कब्रिस्तान में गाड़ दिया। अभी कल की बात है जब रूस का राज्य ताश के पत्तों की भांति बिखर गया तो लोगों में लेनिन और स्टालिन के प्रति रोष पैदा हुआ, वैर की आग भड़क उठी। चारों ओर से यही पुकार थी कि लेनिन को फांसी पर चढ़ा दो। इस पागलपन में चौराहों पर लगे हुए लेनिन के स्टेचू को फांसी पर चढ़ाना शुरू कर दिया। भारतीय संस्कृति में ऐसा कार्य दस्यु कर्म है, अनार्य कर्म है। किसी को क्या कहें-अपने ही भारत में-इस घर को आग लग गई घर के चिराग से-परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति का भवन कौरव-पाण्डवों की वैराग्नि में धू-धू करके जल उठा।

महाभारत के युद्ध में परस्पर का वैर ही मुख्य कारण था। हर व्यक्ति शान्त हुए वैर को भड़का रहा था, पुराने मुर्दे उखाड़ रहा था। भीम और दुर्योधन के बचपन में आरम्भ हुआ वैर अन्त तक शान्त न हुआ। अर्जुन और कर्ण का वैर युद्ध का कारण बना। द्रुपद और द्रोण का वैर तो सीमा को लांघ गया। इतिहास के पन्नों पर उड़ेली गई यह कालिमा कभी धुल नहीं सकती। सभी जानते हैं कि द्रुपद और द्रोण में घनिष्ट मैत्री थी। बात-बात में कभी द्रुपद ने साभिमान कह दिया था कि जब मैं राजसिंहासन पर बैठूंगा तो प्रिय बन्धु मैं तुम्हें मालामाल कर दूंगा। लो वह समय भी आ गया, द्रुपद राजा बन गए और द्रोण अपनी परम्परा के अनुसार निर्धन ब्राह्मण। पत्नी के बहुत कहने पर एकमात्र गाय मांगने के लिए द्रुपद के दरबार में उपस्थित हुए। उस समय द्रुपद ने वैर का बीज अपने हाथो बो दिया। घर आए मित्र ब्राह्मण का घोर अपमान किया और टका-सा जवाब दे दिया-मेरी तुम्हारी क्या दोस्ती, क्या बराबरी-ययोरेव समं वित्तं ययोरेव समं कुलं, तयोर्मैत्री विवाहश्च न तु पुष्टविपुष्टयोः। जिनका धन समान हो, जिनका कुल समान हो, उन्हीं में मैत्री और विवाह-सम्बन्ध होते हैं, बलवान् और दुर्बल में नहीं। द्रोण ने भी इसकी गांठ बांध ली और समय की तलाश में रहे कि कैसे बदला लूं। आखिर समय आ ही गया। कौरव और पाण्डवों की शिक्षा समाप्त हो गई। पाण्डव लोग गुरू-दक्षिणा के लिए उपस्थित हुए, तो द्रोण अपने प्रिय शिष्य अर्जुन से बोले-यदि कुछ दक्षिणा देना चाहते हो तो राजा द्रुपद को बन्दी बनाकर मेरे सामने उपस्थित करो। अर्जुन और भीम के लिए क्या कठिन बात थी। उन्होंने महाराजा द्रुपद को कैद कर द्रोण के सामने उपस्थित कर दिया। आज उल्टी बात थी मानो द्रोण राज सिंहासन पर बैठे थे और महाराज द्रुपद अपराधी के रूप में उपस्थित थे। अपराधी की आंखें न उठती थीं, न द्रोण से मिला ही सकती थीं। भरी सभा में द्रुपद का अपमान हुआ। वैर की गांठ और गाढ़ी हो गई। द्रुपद ने निश्चय कर लिया कि इसका बदला लेना ही है। अतः उसने अभिचार-यज्ञ किया। परिणामस्वरूप महारानी की कोख से द्रौपदी और उसके भाई धृष्टद्युम्न का जन्म हुआ। इतिहासकार लिखता है कि जब युद्धभूमि में द्रोण ने अपने पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु का समाचार सुना इस समाचार से व्याकुल हो युद्ध भूमि में ही शस्त्र त्यागकर द्रोण समाधिस्थ हो गए। द्रुपद पुत्र धृष्टद्युम्न ने ऐसे अवसर को हाथ से खोना पसन्द नहीं किया और तलवार की तेज धार से द्रोण का सिर कलम कर दिया। वैर की ग्रन्थि और दृढ़ हो गई।

दुर्योधन युद्धभूमि में अन्तिम श्वास ले रहा था। उसी समय कृपाचार्य, अश्वत्थामा और कृतवर्मा ने दुर्योधन से भेंट की। दुर्योधन ने मरते समय अश्वत्थामा को सेनापति घोषित कर दिया। रात का समय तीनों ने कहीं जंगल में दूर जा बिताया। कृप और कृतवर्मा दोनों सो गए परन्तु अश्वत्थामा जागता रहा, उसमें वैर की अग्नि धधक रही थी, उस पर बदले का भूत सवार था, उसे नींद कहां ? उसने देखा कि जिस वृक्ष के नीचे वे सो रहे हैं, उस पर कौवे के घोंसले हैं। एक उल्लू आया और अचेत पड़े हुए कौओं को झपटकर खा गया। अश्वत्थामा को फैसला करते देर न लगी। पाण्डवों से बदला लेने का यह उत्तम उपाय है। वे सभी विजय के उन्माद में मस्त होकर सो रहे होंगे। मैं भी इस उल्लू की भांति उन सोते हुओं पर झपट पडूंगा और मार डालूंगा। उसने कृप और कृतवर्मा को जगाया और सब कहानी कहकर अपने निश्चय से अवगत करा दिया और कहा कि सोतों पर वार करेंगे और पाण्डवों का मूलोच्छेद कर देंगे। कृपाचार्य जी अश्वत्थामा के मामा थे। उन्होंने रोकना चाहा कि नहीं-यह अनैतिक कर्म है, घृणित कर्म हैं, इसे नहीं करना चाहिए, परन्तु अश्वत्थामा रुका नहीं। अन्त में तीनों ने ही रात्रि के समय पाण्डवों के शिविर में छापा मारा। इस सुप्तसंहार में पांच पाण्डव, श्रीकृष्ण और सात्यकि बच गए लेकिन मारे गए द्रौपदी के पांचों पुत्र जो कि वहीं सो रहे थे। यह वैर की अग्नि यही समाप्त न हुई। द्रौपदी ने घोर विलाप किया। उसके पांचों पुत्र निर्दयता से मारे गए थे। उसने विलाप-विलाप में अर्जुन और भीम से द्रोण-पुत्र अश्वत्थामा को जीवित पकड़कर लाने को कहा। उनके लिए कोई कठिनाई न थी। कुछ ही देर में अश्वत्थामा को उन्होंने बन्दी बनाकर उपस्थित कर दिया और यह भी कहा कि आप आदेश दीजिए, उसका तत्काल पालन होगा। द्रौपदी गम्भीर हो गई। क्या अश्वत्थामा को मारने से मेरे पुत्र मुझको मिल जाएंगे। मैं तो निपूती होने का दुःख भोग रही हूं। आचार्य पत्नी निपूती न हो जाए, इसलिए मुक्त कर दो-मानो वह राम के शब्दों को दुहरा रही थी-मरणान्तानि वैराणि निवृत्तं नः प्रयोजनम्।

(क्रमशः)

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

जब भारत में विदेशी शासन की जड़ें हिलने लगी थी, जब प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के क्रान्तिकारी सेनानी तांत्या टोपे, महर्षि दयानन्द आदि अंग्रेजों की गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई भारत मां के माथे पर स्वतन्त्रता का ताज रखने की तैयारियां कर रहे थे उसी पावन एवं क्रान्तिकारी वेला में सन् 1856 में जालन्धर के तलवन ग्राम में लाला नानक चन्द के घर स्वामी श्रद्धानन्द (मुन्शीराम) का जन्म हुआ था। मुंशीराम के पिता पुलिस के उच्च अधिकारी थे। बालक मुंशीराम की शिक्षा बनारस से प्रारम्भ हुई, जहां पर उनके पिता लाला नानक चन्द इंस्पेक्टर जनरल पुलिस थे। फिर मुंशीराम ने लाहौर से वकालत की परीक्षा पास की। मुन्शीराम का विवाह जालन्धर के रईस राय सालिगराम की पुत्री शिवदेवी के साथ हुआ। उस समय उनके पिता का स्थानान्तरण बरेली हो गया। इन दिनों में मुन्शीराम के चरित्र में दोष आ गया। वे बेलगाम घोड़े की तरह मद्यपान और वेश्याओं के नाच रंग में तल्लीन हो रहे थे और धर्म तथा ईश्वर की सत्ता मानने से भी इन्कार करने लगे थे। बनारस में एक दिन वे काशी विश्वनाथ के मन्दिर में गए। वहां उन्हें प्रविष्ट होने से रोका गया और बताया गया कि एक रानी साहिबा भगवान विश्वनाथ के दर्शन करने मन्दिर में गई हुई हैं। उनके बाहर आने के बाद ही किसी अन्य दर्शनार्थी को मन्दिर में जाने दिया जाएगा। युवा मुन्शीराम के मन पर चोट लगी कि भगवान के मन्दिर में भी राजा और रंक में भेद है। इससे उनके अन्दर नास्तिकता के भाव पैदा होने लगे। इसके पश्चात वे ईसाई मत की ओर आकर्षित हुए परन्तु वहां पर भी उन्होंने ऐसे घृणित दृश्य देखें कि उन्हें ईसाई मत से भी घृणा हो गई। मुन्शीराम उन दिनों मांस, शराब और नास्तिकता के शिकार हो चुके थे। कुछ दिनों पश्चात बरेली में महर्षि दयानन्द का पदार्पण हुआ। बरेली में स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों का प्रबन्ध करने के लिए सरकारी आज्ञा हुई तथा लाला नानक चन्द जी को नियुक्त किया गया। सभा के प्रबन्धक के रूप में लाला नानक चन्द जी महर्षि के व्याख्यानों से प्रभावित हुए। उन्होंने सोचा कि अपने नास्तिक पुत्र को सत्संग में लाना चाहिए। नानक चन्द जी ने अपने पुत्र मुन्शीराम को कहा कि मेरे साथ सत्संग में जाना है। मुन्शीराम बोला, पिताजी यह संस्कृत जानने वाला साधु क्या मेरे तर्कों का उत्तर दे सकता है? उनके पिता ने कहा- बेटा चलने में क्या हर्ज है। यदि उनकी बात समझ में न आए तो मत मानना। इसके पश्चात मुन्शीराम प्रथम बार महर्षि दयानन्द का भाषण सुनने गए। जब महर्षि दयानन्द पर उनकी दृष्टि पड़ी तो अत्यन्त तेजोमय मुखमण्डल ब्रह्मचर्य की आभा से ओतप्रोत सुड़ौल शरीर को देखा और वाणी का पाण्डित्यपूर्ण उच्चारण तथा श्रोताओं में बरेली के बड़े-बड़े उच्च अंग्रेज अधिकारियों को देखा तो मुन्शीराम प्रथम साक्षात्कार में ही प्रभावित हो गया। भाषण के पश्चात महर्षि के चरणों में उपस्थित होकर कहा कि क्या मेरी शंकाओं का समाधान भी किया जाएगा। स्वामी जी ने प्रसन्नतापूर्वक उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। मुन्शीराम ने ईश्वर की सत्ता पर तीखे प्रहार किए परन्तु स्वामी जी ने बड़े प्रेम से उत्तर दिए। थोड़े समय के पश्चात मुन्शीराम अवाक् होकर बोले महाराज आपने मेरी जबान तो बन्द कर दी किन्तु हृदय में विश्वास नहीं होता कि इस ब्रह्माण्ड को बनाने वाली कोई शक्ति सम्पन्न सत्ता है। महर्षि दयानन्द बोले जब ईश्वर की कृपा होगी तो यह विश्वास भी हो जाएगा। इन शब्दों ने मुन्शीराम के ऊपर जादू का असर किया और वे प्रतिदिन श्री महाराज के चरणों में उपस्थित होकर अपने आपको निहाल करते रहे। यही वह घटना थी जिसने मुन्शीराम के मानस पटल को बदल दिया और धर्म परायण धर्मपत्नी शिवदेवी की प्रेरणा और अन्य घटनाओं से मांस और शराब छूट गई। वकालत करते हुए उनकी गणना उस समय प्रसिद्ध वकीलों में होती थी। वे झूठे मुकद्दमे की पैरवी नहीं करते थे। मुन्शीराम के ऊपर जब आर्य समाज का रंग चढ़ गया तो उन्होंने वकालत छोड़कर वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को अपने योगदान से देश भर में अग्रगण्य संस्थाओं में लाकर खड़ा कर दिया। उस समय उनके सामने ऐसे विद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव विचाराधीन था जिससे अंग्रेजी सत्ता के चंगुल से भारतीय विद्यार्थी बचाए जा सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना हरिद्वार में की और अंग्रेजी राज्यकाल में यह प्रथम विद्यालय था जिसमें शिक्षा का माध्यम हिन्दी रखा गया। कल्याण मार्ग के पथिक महात्मा मुन्शीराम ने सर्वात्मना त्याग भावना से प्रेरित होकर अपनी जालन्धर वाली कोठी व सब सम्पत्ति आर्य समाज को दान कर दी। परमात्मा में उनकी असीम श्रद्धा थी इसलिए उन्होंने सन्यास के पश्चात अपना नाम श्रद्धानन्द रखवाया।

गुरूकुल कांगड़ी का प्रबन्ध आचार्य रामदेव को सौंप कर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज दिल्ली में पधारे और यहां से उनकी राजनैतिक और धार्मिक गतिविधियों का प्रारम्भ हुआ। सन् 1922 में जब सिक्खों ने गुरू के बाग का सत्याग्रह प्रारम्भ किया और अंग्रेजी सरकार उस आन्दोलन को दबाने की तैयारी करने लगी तो इस समाचार को सुनकर स्वामी श्रद्धानन्द जी तुरन्त अमृतसर पहुंच गए और सत्याग्रह का संचालन उन्होंने स्वयं अपने हाथ में लिया। वीर सन्यासी ने गुरू का बाग सत्याग्रह के प्रथम जत्थे के प्रथम सत्याग्रही के रूप में अपने को प्रस्तुत किया और वे अंग्रेजी सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन में स्वामी जी ने सक्रिय भाग लिया और उस समय के देश के अग्रिम नेताओं में दिखाई दिए। अमृतसर के जलियांवाला बाग में हुई क्रूर घटना को देखकर पंजाब की भूमि प्रकम्पित हो उठी। ऐसी स्थिति में कांग्रेस का नाम लेने वाला भी पंजाब में दिखाई नहीं देता था। तब स्वामी जी ने कांग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में बुलाने का प्रस्ताव किया और स्वयं उनके स्वागताध्यक्ष बनें। कांग्रेस के इतिहास में सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना भाषण हिन्दी में पढ़ा। 1919 में जब दिल्ली में कांग्रेस की सभाएं और जलूस बन्द करने का आदेश दिया गया तो उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व में एक बहुत बड़ा जलूस निकाला गया। चांदनी चौक पर जलूस को रोककर चेतावनी दी गई कि पीछे हट जाओ नहीं तो गोली चला दी जाएगी। उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गोरों की संगीनों के सामने अपना सीना तानकर कहा कि हिम्मत है तो पहले गोली मुझ पर चलाओ बाद में सत्याग्रहियों पर चलाना। स्वामी जी की निर्भीकता को देखकर जवानों को संगीने हटा लेने का आदेश दिया गया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। इसलिए मुसलमानों ने जामा मस्जिद के मैम्बर पर खड़े होकर उपदेश करने की प्रार्थना की। इस्लाम के इतिहास में यह पहली घटना थी कि किसी गैर मुस्लिम को इस प्रकार का सम्मान दिया गया हो। कांग्रेस के मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया और खुले रूप से भारतीयकरण का कार्य अपने हाथ में लिया। सर्वप्रथम उन्होंने आगरा के मलकाने राजपूतों को स्वधर्म में वापस लेकर इस महान् आन्दोलन का सूत्रपात किया। स्वामी श्रद्धानन्द के इस कार्य से कुछ साम्प्रदायिक लोग उनसे नाराज हो गए और 23 दिसम्बर 1926 को एक मतान्ध साम्प्रदायिक अब्दुल रसीद ने गोली मारकर हत्या कर दी। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जीवन पर्यन्त देश, धर्म और जाति के लिए सर्वस्व बलिदान किया और अन्तिम क्षणों में अपना भौतिक शरीर भी राष्ट्र को अर्पण कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा किए गए मानवता के तथा राष्ट्रहित के कार्यों को हमेशा याद किया जाएगा।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

thearyasamaj.org

तलवन का तपस्वी

-ले० भद्रसेन आर्य, 182-शालीमार नगर, होशियारपुर

तलवन-पंजाब के जालन्धर ज़िले का आज एक कस्बा है। यहां 1856 में एक बालक का जन्म हुआ। जिस का नाम मुंशीराम प्रचलित हुआ। जो कि आगे चलकर महात्मा मुंशीराम जी और फिर सन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में प्रख्यात हुआ। जालन्धर में वकालत का कारोबार किया। यहीं साथ-साथ आर्य समाज के माध्यम से समाज-सेवा का भी कार्य किया। प्रगति करते-करते पंजाब प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने। सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय के प्रभाव से प्रथम श्री देवराज जी को आगे करके कन्या विद्यालय की स्थापना की। जो आज महाविद्यालय के रूप में शताब्दी पूर्ण कर चुका है। इसमें बेटी के गीत के बोल भी विशेष प्रेरक बने। फिर गुरुकुल योजना का संकल्प लेकर 1902 से हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की प्रतिष्ठा में दिन-रात एक कर दिया। 1917 में सन्यास के साथ ही कार्यक्षेत्र विस्तृत कर लिया। स्वाधीनता संग्राम, दलित उद्धार और शुद्धि आन्दोलन आदि विशेष कार्य योजना में आए।

तपस्वी-तप करने वाले को तपस्वी कहा जाता है। हमारे शास्त्रों में तप शब्द अनेक अर्थों में आता है। साधारण जनता में तप शब्द का अर्थ भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी आदि कष्टों को सहने और कुछ त्याग करने के रूप में माना जाता है। योग दर्शन में आया है कि 'द्वन्द्वसहनं तपः' अर्थात् भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, मान-अपमान आदि जो द्वन्द्व = दो के रूप में जोड़ते हैं। उनको सहने का नाम ही तप है। महाभारत के प्रणेता आचार्य वेद व्यास ने तप की सार्थकता को सामने रखकर कहा है, कि तपः स्वधर्मवर्तित्वम् (आरण्यक : 32, 5) किसी कर्त्तव्य कर्म को करते हुए अनेक प्रकार के कष्ट, क्लेश, दुख आते ही हैं। बिना घबराए, धैर्यपूर्वक कर्त्तव्यपूर्ण करने में ही किसी की सार्थकता स्पष्ट होती है। वस्तुतः ऐसी स्थिति में तप तपने से व्यक्ति कुन्दन बन कर, चमक कर निखर जाता है। अत एवं समाज में तपस्वी को विशेष मान, आदर, सत्कार दिया जाता है। तप शब्द का एक विशेष वर्णन तैत्तिरीय उपनिषद की शिक्षावली में आया है। वहां कहा है-ऋतं च स्वाध्यायप्रवचने च। सत्यं च स्वाध्याय.../...यमश्च..../...तद्धि तपस्तद्धि तपः (1, 9)। इस सन्दर्भ का मनन करने से स्पष्ट होता है, कि ये ऋत, सत्य, दम आदि सारे के सारे तप नाम से भी पुकारे जाते हैं। अतः तप शब्द के ये-ये अर्थ, पर्याय हैं।

जब हम स्वामी श्रद्धानन्द जी के समग्र जीवन पर विचार करते हैं, तो सामने आता है, कि ऋत, सत्य आदि सारे के सारे तप के रूप आप के जीवन में समाए हुए थे। स्वामी जी ने अपने जीवन में पग-पग पर इन गुणों, भावनाओं को चरितार्थ करने का पूर्ण प्रयत्न किया।

ऋत-जैसे कि ऋत शब्द प्राकृतिक सचाई, नियम, व्यवस्था के अर्थ में है। इसके महत्त्व को पूरी तरह से महात्मा मुंशीराम जी ने समझा, सोचा, विचारा था। तभी तो गुरुकुल की जब बात आई, तो 'उपत्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम् मन्त्र' (ऋग्वेद 8, 6, 28) की भावना को चरितार्थ करने के लिए प्रकृति की गोद में, वृक्षों के मध्य में झोंपड़ी के वास से इसका प्रारम्भ किया। विद्यार्थीवृन्द, शिक्षक गण के साथ मिलकर औषधि पादपों, फूलों विशेष वनस्पति और फलदार वृक्षों को स्वामी जी स्वयं भी लगाते रहें।

सत्य-वकालत जैसे बदनाम कारोबार में भी (छल, धोखे से दूर रहकर) सत्य को निभाने का सदा प्रयास किया।

दमः = मन, इन्द्रियों को जीतना। मुंशीराम जी 36 वर्ष की आयु में विधुर हो गए। रिश्तेदारों के दबाव की चिन्ता न करते हुए भी पुनः विवाह नहीं किया। और न ही इस सम्बन्ध में कोई कभी कमजोरी आने दी।

मनुस्मृति में प्राणायाम, स्वाध्याय आदि को भी तप कहा है। प्राचीन शिक्षा पद्धति में प्रत्येक विद्यार्थी को प्रारम्भ से ही योग के आसन, प्राणायाम का अभ्यास करने का विधान है। योगदर्शन आदि का कथन है, कि योग के अंगों का नियमित अभ्यास करते रहने से शारीरिक, मानसिक अशुद्धियां दूर होती हैं और स्वास्थ्य तथा ज्ञान की योग्यता प्राप्त होती है।

मनुस्मृति में स्वाध्याय शब्द वेद के लिए भी आता है। स्वाध्याय शब्द का यौगिकपन दो प्रकार से किया जा सकता है। जैसे कि सु + आ + अध्याय, स्व + अध्याय। अतः इस शब्द का अर्थ होगा, कि वेद आदि ग्रन्थों का अध्ययन, किसी ग्रन्थ को अच्छी प्रकार = मनन = सोच कर पढ़ना तथा स्व = अपने-आपको समझना। अपने जीवन = क्रियाकलाप का निरीक्षण = जांच पड़ताल करना। जैसे कि मैं किसी कर्म को किस भावना से कैसे करता हूं ? और किस से कैसे, कितना हित-अहित होता है? कौन कर्म कितना अनुकूल-प्रतिकूल है ? कौन बात, कार्य किसके लिए युक्त या अयुक्त या अनुपयुक्त है ?

बालक मुंशीराम ने अपनी शिक्षा उत्तर प्रदेश के स्कूलों से आरम्भ की। जहां उर्दू-हिन्दी-गणित-अंग्रेजी आदि का ज्ञान प्राप्त किया। कालेज में अपनी योग्यता को परिपक्व किया। 1880 में वकालत में प्रवेश किया। सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से जीवन के सिद्धान्तों का निश्चय किया। वहां वेद-उपनिषद-रामायण-महाभारत का गहरा अध्ययन किया। आप की लिखी 'धर्मोपदेश' के नाम से प्रसिद्ध पुस्तक स्वामी श्रद्धानन्द जी का वैदिक साहित्य में कितना गहरा प्रवेश था को सिद्ध करती है। वैसे उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी भाषाओं पर आपका असाधारण अधिकार था। इन भाषाओं में अपने अनेक रचनाएं प्रकाशित कीं। इन भाषाओं के दैनिक, साप्ताहिक पत्र भी चलाए। इनमें लगातार लेख भी लिखे।

इस सारे विवेचन से स्वतः सिद्ध होता है, कि जहां शास्त्रों के अनुसार ऋत, सत्य, दम, योग, स्वाध्याय आदि तप हैं। वहां व्यावहारिक रूप से भी ये सारे धर्म के ऐसे तत्व, गुण हैं। जिनको धारण करके इस तप की भट्ठी में तप कर प्रत्येक कुन्दन बनता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का सारा जीवन इस का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

thearyasamaj.org

स्वामी दयानन्द सरस्वती के उद्देश्य क्या थे

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला, देहरादून

स्वामी जी को भिन्न-भिन्न लोगों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से समझा है, इसलिए हम यहां संक्षिप्त रूप से स्वामी जी के उद्देश्यों का वर्णन करते हैं।

संसार को मनुष्य पूजा, अवतार पूजा, पाषाण पूजा, कबर, मढी, मसान, प्रतिमा, पशु और वृक्ष इन सब प्रकार की मिथ्या पूजा तथा भ्रमजाल से छुड़ा कर केवल परमात्मा की पूजा तथा ईश्वर भक्ति का उपदेश किया। उसने देखा कि तमाम मतमतान्तरों के लोग मरदुम परस्ती के गढ़े में गिर पड़े हैं। इसलिए उसने वैदिक धर्म में तथा आर्य समाज के नियमों, उपनियमों और अपने रचित ग्रन्थों में अपने नाम को कहीं जगह नहीं दी, न अपने मन्तव्यों में कहीं दयानन्द के शब्द को कोई स्थान दिया। वह संसार में एक ही वेदमत चलाना चाहते थे जो पीर, पैगम्बर, मोक्ष-दाता पुरूषों की शख्सियत से पाक हैं।

देशभक्ति उसका दूसरा उद्देश्य था, चुनांचे ब्रह्म समाज पर समालोचना करते हुए वह सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं-

परन्तु इन लोगों में (ब्रह्म समाजियों से मुराद है) स्वदेश भक्ति बहुत कम है। अपने देश की प्रशंसा तथा पूर्वजों की बड़ाई तो दूर रहीं, ब्रह्मा आदि ऋषियों का नाम तक भी नहीं लेते। भला जो आर्यवर्त्त देश में उत्पन्न हुए हैं और जिन्होंने इस देश का पानी पिया है, अपने पूर्वजों के मार्ग को छोड़ कर अन्य देशीय सभ्यता पर मुग्ध हो जाना उस सज्जन तथा धर्मात्मा पुरूषों का काम नहीं। देखो अपने देश के बनाए हुए जूतों को अंग्रेज़ लोग दफ्तर में ले जाने देते हैं, परन्तु इस देश के जूते को नहीं। गोरा हमारे देश के मनुष्यों से अधिक अपने जूते का मान करते हैं। देखो 100 वर्ष से अधिक हुए कि इस देश में यूरोपियन लोग आए और आज तक ये लोग मोटा कपड़ा पहनते हैं जैसा कि अपने देश में पहनते थे। इन्होंने अपने देश का चाल चलन नहीं छोड़ा और तुम में से बहुत से लोगों ने उसका अनुकरण कर लिया है। तुम मन्द बुद्धि और वह बुद्धिमान प्रतीत होते हैं। अन्धा अनुकरण करना बुद्धिमानों का काम नहीं।

आपको उचित है कि जिस देश की वस्तु से अपना शरीर बना और अब भी परवरिश पा रहा है और आयन्दा पावेगा उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब लोग चित्त तथा प्रेम से करें।

आर्यावर्त्त तथा मातृभूमि के प्रेम के विषय में-यह आर्यावर्त्त ऐसा देश है कि जिसके समान पृथिवी पर अन्य कोई देश नहीं है इसीलिए इस देश का नाम स्वर्णभूमि है क्योंकि स्वर्ण, रत्न, हीरे, जवाहरात, आदि यहीं उत्पन्न होते हैं, इसलिए अन्य देशों के निवासी लोग इसकी प्रशंसा करते हैं और आशा रखते हैं कि पारस पत्थर जो सुना जाता है, वह बात तो झूठी है परन्तु आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारस पत्थर है कि जिसको लोहे के समान अन्य देश के कंगाल लोग स्पर्श करते ही स्वर्ण के समान धनपति बन जाते हैं।

यह निश्चित है कि जितनी विद्याएं और धर्म पृथिवी पर फैले हैं, वे सब आर्यावर्त्त से ही फैले हैं। जो राजनीति भूमण्डल पर प्रचलित हैं या होगी वह सब संस्कृत विद्या से ली गई है। वेद संस्कृत भाषा में प्रकट हुए जो किसी देश की भाषा नहीं। और वेदों की भाषा ही तमाम भाषाओं की मूल स्रोत है।

महर्षि दयानन्द का उद्देश्य संसार का तथा मनुष्य मात्र का उपकार करना तथा शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति में वह मनुष्य मात्र की भलाई समझते थे।

महर्षि दयानन्द का उद्देश्य मिलाप कराना था, भेदभाव हटा कर वह सबको एक मत पर लाना चाहते थे।

उनका उद्देश्य था कि तमाम देशों में स्वतन्त्रता तथा स्वराज्य की स्थापना हो, वह केवल भारतवर्ष को ही स्वराज्य दिलाना नहीं चाहते थे, परन्तु प्रत्येक देश में चाहते थे कि प्रजातान्त्रिक राज्य से स्थापना हो, भारत के सम्बन्ध में वह लिखते हैं कि-

1. सत्यार्थ प्रकाश पंक्ति 237-अन्य देशों में राज्य करना तो अलग रहा अपने देश में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन और निर्भय राज्य नहीं है, जो कुछ है, वह भी विदेशियों से पदाक्रान्त हो रहा है।

2. यजुर्वेद भाष्य पृष्ठ 514-"मनुष्यों को चाहिए कि पुरूषार्थ करके पराधीनता से छूटकर स्वतन्त्रता को प्राप्त करें।"

3. आर्याभिविनय पृष्ठ 108-हे महाराजाधिराज पार-ब्रह्म परमेश्वर हम लोगों को यथावत् पुष्ट करे, अन्य देशीय राजे अर्थात् शासक हमारे देश में कभी न हो तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।

4. यजुर्वेद 15/5-इस जगत में किसी मनुष्य को विद्या के प्रकाश का अभ्यास, अपनी स्वतन्त्रता और हर प्रकार से अपने कार्यों की उन्नति को न छोड़ना चाहिए।

5. वह चाहते थे कि संसार में समस्त भूमण्डल पर ऐसा राज्य हो जो सब जातियों से बलपूर्वक (जबरदस्ती) कानून मनवाएं। उनका कथन है कि संसार में शान्ति चक्रवर्ती राज्य से हो सकती है, जिसके पास जल, थल तथा वायु में युद्ध करने वाली सेना अधिक हो, जिसकी ध्वजा संसार भर में लहरावे। चुनांचे H.C. Wells ने भी अपनी पुस्तक Sulvaging of civilization में वर्तमान League of Nations के विरुद्ध लिखा है कि "A league from which large sections of the world are excluded is no contribution to that need. It may be worse than nothing. If man is to be saved from destruction, there must be a world control such a world Government that should have navy to super-sede the British, artillery to surpass the French and Air force superseding all other air forces. For many flags there must be one sovereign flag.

अर्थ-यदि मनुष्य को तबाही से बचाना है तो सार्वभौमिक अध्यक्षता होनी चाहिए। जिसके पास जलमार्गी इतनी सेना हो जो बर्तानिया से अधिक हो, तोपखाना फ्रांस के राज्य से अधिक हो, और वायुयान तमाम देशों के वायुयानों की शक्ति से अधिक हों। अधिक ध्वजाओं के स्थान में एक ही चक्रवर्ती ध्वजा हो।

6. अछूतों, अन्त्यजों तथा अन्य जातियों को उठाना तथा उनके साथ समानता का व्यवहार, जाति के अभिमान को तोड़कर मनुष्य मात्र से प्रेम तथा मैत्रीभाव का बर्ताव करना।

7. प्राचीन सभ्यता को पुनः जीवित कर उसका गौरव जनता पर प्रकट किया तथा हिन्द को भारत तथा ऋषि भूमि बना दिया।

8. भारत के लिए एक लिपि तथा देवनागरी का प्रचार किया, इसलिए तमाम ग्रन्थ हिन्दी भाषा में प्रकाशित किए। उनका विचार था कि भारत तब तक संगठित नहीं हो सकता जब तक कि इसके सभी नागरिक एक भाषा बोलने तथा लिखने वाले न हो।

9. वेदों के ऊपर से पश्चिमी विद्वानों के लगाए हुए मिथ्या लांछनों तथा दोषों को दूर किया। वेद को विज्ञान तथा तत्वज्ञान की बुद्धिपूर्वक की गई रचना व पुस्तक सिद्ध किया। अन्य तमाम मत मतान्तरों की अपेक्षा वेद को उच्च कोटि की पुस्तक, ईश्वरीय ज्ञान के भण्डार तथा हर प्रकार से शुद्ध व पवित्र सिद्ध कर दिया।

10. शुद्धि का दरवाजा खोल दिया और बताया कि वेद के स्वाध्याय का अधिकार मनुष्य मात्र को है, इसलिए प्रत्येक मनुष्य जो वेद को माने, वह आर्य धर्म में प्रवेश कर सकता है। गोया हिन्दू धर्म जो प्रतिदिन सुकड़ता जा रहा था उसको सागर के समान विशाल कर दिया। हिन्दू जाति जो प्रतिदिन मुसलमानों और ईसाईयों का निवाला बन रही थी, अब होश में आ गई है और वह बिछुड़े हुए भाईयों को गले लगा कर अपने भीतर मिला रही है।

11. स्वामी जी का उद्देश्य था कि भारत में पुनः ब्रह्मचर्य की प्रथा चले, इसलिए उन्होंने वर्तमान शिक्षा प्रणाली के विरुद्ध आवाज़ उठाई। उसका परिणाम यह हुआ कि भारत में बड़ी संख्या में गुरूकुल स्थापित हो गए और प्रतिदिन उनकी संख्या अधिक हो रही है। आज संसार के बड़े-बड़े विद्वान तथा अन्य मत-मतान्तरों के नेता भी ऋषि शिक्षा प्रणाली का अनुकरण कर रहे हैं।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

thearyasamaj.org

श्रद्धा और आनन्द के प्रतीक-स्वामी श्रद्धानन्द

ले० श्री सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय जालन्धर

ऋग्वेद के दसवें मण्ड़ल के १५१वें श्रद्धा सूक्त में एक बड़ा ही उत्तम वेद वाक्य है-

श्रद्धा हृदय्याकूत्या श्रद्धया विन्दते वसून्।

अर्थात् हृदय में अटूट श्रद्धा व संकल्प शक्ति को धारण करके श्रद्धा के द्वारा धन वैभव प्राप्त हो सकता है। वास्तव में यदि देखा जाए तो जो कुछ भी कार्य इस सृष्टि में किया जाता है उसकी सफलता का आधार श्रद्धा व संकल्प शक्ति ही है। दुनिया का कठिन से कठिन कार्य भी श्रद्धा और संकल्प शक्ति से सरल बन जाया करता है और सभी सांसारिक व पारलौकिक सुखों की प्राप्ति सम्भव है। दर्शन शास्त्रों में भी धर्म-अर्थ-काम- मोक्ष को पुरूषार्थ चतुष्टय कहा गया है। अर्थात् सब प्रकार के कार्यों में पुरूषार्थ प्रमुख है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का कार्यक्षेत्र हमेशा से ही श्रद्धा और विश्वास पर आधारित रहा है। जीवन के प्रथम चरण में जब मुन्शीराम ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के दर्शन नहीं किए थे तब तक वे आस्थाहीन यहां-वहां भ्रमण करते रहे। बरेली में मुन्शीराम का स्वामी दयानन्द से प्रथम साक्षात्कार हुआ तो उसी क्षण उनके जीवन में परिवर्तन की शुरूआत हुई। मुन्शीराम वकालत कार्य करते हुए भी प्रसन्तापूर्वक उस व्यवसाय के दुर्गुणों से बचते रहे और जब उन्होंने स्वामी दयानन्द के मिशन की पूर्ति के लिए कदम आगे बढ़ाया तो फिर यह ध्यान ही नहीं रहा कि मेरा व्यवसाय क्या है। सब व्यवसायात्मक कार्यों को पूरा करके शिक्षा के क्षेत्र में सूत्रपात किया। कौन जानता था कि उनके द्वारा लगाया गया कांगड़ी गांव में वह छोटा सा पौधा एक दिन विशाल व सुदृढ़ वटवृक्ष का स्थान ले लेगा और अनेक ज्ञानपिपासु पथिक उसकी अमृतमय छाया को प्राप्त कर तृप्ति का अनुभव करेंगे। स्वामी श्रद्धानन्द के अन्दर गुरूकुल के लिए कितनी श्रद्धा थी, इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने गुरूकुल के लिए अपनी सम्पत्ति का दान तथा उससे भी बढ़कर गुरूकुल कांगड़ी के लिए सर्वप्रथम अपनी सन्तानों का दान कर दिया। ये दो बातें सिद्ध करती हैं कि स्वामी श्रद्धानन्द अपने संकल्प पर कितने दृढ़ थे।

श्रद्धा उत्पादन सरल कार्य नहीं है। सामान्यतया प्रत्येक कार्य ही श्रद्धाप्लावित होकर पूर्ण होता है। परन्तु वेद का मन्त्र इसे और भी स्पष्ट करता है-

व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षया आप्नोति दक्षिणाम्, दक्षिणा श्रद्धां आप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

अर्थात् श्रद्धा प्राप्ति से पूर्व दो वस्तुओं का होना अनिवार्य है, व्रत और दीक्षा। बिना निश्चयात्मक शक्ति तथा कुशलता के हम कोई भी कार्य पूर्ण नहीं कर सकते। फिर स्वामी श्रद्धानन्द जैसे तमाम महापुरूषों ने तो पराक्रम तथा यश व विशालता से परिपूर्ण अनेक कार्य किए। स्वामी श्रद्धानन्द का सम्पूर्ण जीवन श्रद्धा से परिपूर्ण रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द का सारा जीवन इसी को केन्द्रबिन्दु बनाकर चारों ओर घूमता है। सन्यास ग्रहण करते समय स्वयं उन्होंने यह बात स्वीकार की थी और कहा था कि आज तक मैं सारा जीवन ऋषि दयानन्द के चरणों में बिताने का प्रयास करता रहा हूं। इसीलिए मैं अपना नाम स्वामी श्रद्धानन्द रखना चाहता हूं। ऋषि चरणों में अपनी अगाध श्रद्धा को अभिव्यक्त करते हुए 1925 ई. में मथुरा जन्म शताब्दी के अवसर पर जो भावपूर्ण श्रद्धाजंलि स्वामी जी ने अर्पित की थी, उसका एक-एक शब्द हृदय वीणा के तारों को छूने वाला है-

ऋषिवर! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे 41 वर्ष हो गए हैं परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय पटल पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी रक्षा की है? तुमने कितनी गिरती हुई आत्माओं की काया पलट दी है? इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है? बिना परमात्मा के जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है? परन्तु अपने विषय में कह सकता हूं कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरती हुई अवस्था से उठा कर सच्चा जीवन लाभ करने योग्य बनाया है। मैं क्या था, क्या बन गया और अब क्या हूं, वह सब तुम्हारी कृपा का परिणाम है। भगवन्! मैं तुम्हारा ऋणी हूं, उस ऋण से मुक्त होना चाहता हूं। इसलिए जिस परमपिता की असीम गोद में तुम परमानन्द का अनुभव कर रहे हो, उसी से प्रार्थना करता हूं कि मुझे तुम्हारा सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करे!

स्वामी श्रद्धानन्द सच्चे अर्थों में युगपुरूष थे। वे जिधर को चलते थे समय उनके पीछे चलता था। जनता उनके संकेत पर चलने को कटिबद्ध थी। स्वामी श्रद्धानन्द ने सभी क्षेत्रों में ऋषि के मन्तव्यों, वचनों, लेखों तथा इच्छाओं को क्रियात्मक रूप देने का बीड़ा उठाया। ऋषि मन्त्रदाता थे तो स्वामी श्रद्धानन्द मन्त्र साधक थे। विदेशी शिक्षा प्रणाली के विरूद्ध आन्दोलन के रूप में उन्होंने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की और इस युग में एक बार पुनः ब्रह्मचर्याश्रम पद्धति के आदर्श को सजीव कर दिया। आर्य जाति की रक्षा के लिए भी उन्होंने प्रयास किया। धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र के साथ-साथ स्वामी श्रद्धानन्द ने राजनीति के क्षेत्र में भी श्रद्धा और पूर्ण विश्वास के साथ कार्य किया। उनकी राजनैतिक गतिविधियां भी उतनी ही प्रभावशाली थी जितनी धार्मिक क्षेत्र की। राष्ट्र के स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में उनका स्थान एक यशस्वी और सेनानायक के रूप में सुरक्षित है। गोरे शासकों के क्रूर अत्याचारों से आतंकित पंजाब कांग्रेस का अधिवेशन बुलाने का किसी में साहस नहीं हुआ तो स्वामी श्रद्धानन्द जी मैदान में उतरे और अमृतसर में कांग्रेस का ऐतिहासिक अधिवेशन आयोजित किया। वे स्वयं इस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बनें और अपने साहस, परिश्रम और श्रद्धा से इस कार्यक्रम को सफल किया।

ऐसे श्रद्धा की साक्षात् मूर्ति और युगपुरूष स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाते हुए हम भी उनके श्रद्धामय जीवन से शिक्षा लेकर मानवता के कार्य करें। स्वामी श्रद्धानन्द ने सम्पूर्ण जीवन मानवता के लिए कार्य किया। अपनी संस्कृति, सभ्यता और मातृभूमि के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणाओं से भरा हुआ है। स्वामी श्रद्धानन्द एक सच्चे कर्मयोगी थे। महात्मा गांधी जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजंलि देते हुए कहा था कि स्वामी श्रद्धानन्द जी एक सुधारक थे। कर्मवीर थे, वाक्शूर नहीं। उसका जीवन जागृत विश्वास था। इसके लिए उन्होंने अनेक कष्ट उठाए थे। वे संकट आने पर कभी घबराए नहीं थे। वे एक वीर सैनिक थे। वीर सैनिक रोग शय्या पर नहीं, किन्तु रणांगन में मरना पसन्द करता है। ऐसे वीर पुरूष को श्रद्धाजंलि देते हुए हम भी उनकी तरह कर्मवीर बनें तथा राष्ट्र को एक नई दिशा प्रदान करें।

thearyasamaj.org

आर्य समाज वेद मन्दिर बस्ती दानिशमंदा जालन्धर का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर लसूड़ी मोहल्ला, बस्ती दानिशमंदा जालन्धर का 35 वां वार्षिक उत्सव 14 -12-2014 से 28 - 12-2014 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। 14 दिसम्बर से 21 दिसम्बर तक प्रात: 5:30 से 7:00 बजे तक प्रभात फेरियां निकाली जाएंगी। 21 दिसम्बर को शोभा यात्रा दोपहर 2 बजे निकाली जाएगी। 24 दिसम्बर से 27 दिसम्बर तक सुबह 7:00से 8:00 बजे तक यज्ञ तथा रात्रि 8:00 से 9:30 तक भजन व प्रवचन होंगे। इस अवसर पर महात्मा विशोकायति जी के भजन तथा श्री विजय कुमार जी शास्त्री के प्रवचन होंगे। मुख्य कार्यक्रम 28-12-2014 रविवार को होगा। यज्ञ की पूर्णाहुति प्रात: 10 से 11 बजे तक होगी। मुख्य यजमान श्री हरिप्रकाश जी होंगे। 11:00 बजे से 2:00 बजे तक मुख्य कार्यक्रम होगा। वेद ज्योति आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी प्रज्वलित करेंगे। ध्वजारोहण श्री अविनाश घई मैनेजिंग डायरेक्टर यूनीक इंडस्ट्रीज के कर कमलों से किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री बाबू सरदारी लाल जी आर्यरत्न करेंगे। आप सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि इस कार्यक्रम में पधार कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

-यशपाल प्रधान आर्य समाज

जर्सी वितरण समारोह

दिनांक 13 दिसम्बर 2014, शनिवार को वैदिक विद्या मंदिर, मालवीय नगर में आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत आर्थिक रूप से कमजोर 225 छात्राओं को सर्दी से बचाव हेतु गर्म जर्सियों का वितरण किया गया। कार्यक्रम प्रात: 11.00 बजे हवन से प्रारंभ हुआ। विद्यालयी छात्राओं ने वैदिक परम्परानुसार तिलक लगाकर एवं समिति उपप्रधान अशोक आर्य, संयुक्त मंत्री सुरेश दरगन, निदेशक कमला शर्मा ने माल्यार्पण कर तथा पुष्पगुच्छ भेंट कर समारोह के मुख्य अतिथि डॉ० राजेश गोयल उप जिला कलक्टर एवं उप ज़िला मजिस्ट्रेट, अलवर का एवं समिति मंत्री प्रदीप आर्य तथा आर्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रधानाचार्य सी. पी. पालीवाल ने समारोह अध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान, आर्य कन्या विद्यालय समित का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

बी. एड. छात्रा अध्यापिकाओं ने स्वागत गान-'आये-आये अतिथि प्रिय आज' द्वारा अतिथियों का स्वागत किया तथा वैदिक मंत्रों से ईश वन्दना 'ओ३म् विश्वानि देवा:' प्रस्तुत की। श्रीमती कमला शर्मा ने स्वागत करते हुए अतिथियों, समिति पदाधिकारियों तथा उपस्थितिजन को सम्बोधित कर नारी शिक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डाला। कमजोर बच्चों के उज्जवल भविष्य निर्माण करने पर जोर डाला। मुख्य अतिथि डॉ० राजेश गोयल, एस. डी. एम. ने सम्बोधित करते हुए समिति के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि समिति नारी शिक्षा के साथ ही साथ सुसंस्कृत नागरिक बना रही है। उन्होंने स्वच्छता पर बल देते हुए स्वच्छता को सभी के जीवन के लिए आवश्यक मानते हुए स्वच्छता अभियान पर बल दिया।

श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने अपने उद्बोधन में नारी को पुरूष से किसी भी प्रकार से कम न मानते हुए, नारी को पुरूष के समान दर्जा देने एवं उसे शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा आर्य कन्या विद्यालय समिति नारी शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है, जहां पर 4500 छात्राएं अध्ययनरत हैं। शिक्षकों को बच्चों की प्रतिभा को पहचानकर उसे संवारने के लिए तथा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। मंच संचालन श्रीमती अनुराधा पालीवाल ने किया। अंत में समिति मंत्री प्रदीप आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर डॉ० राजेन्द्र कुमार आर्य, वेद प्रकाश आर्य, अशोक शर्मा, दिनेश भार्गव, रमेश चुग आदि गणमान्य व्यक्ति, शिक्षकगण तथा विद्यार्थी उपस्थित रहें।

-कमला शर्मा

वर चाहिए

अग्निहोत्री आर्य समाजी ब्राह्मण (4 वैष्णव स्वामी) प्रतिष्ठित बिजनैस मैन परिवार की B.Tech, MBA गौरवर्ण, सुन्दर, सुसन्सकारित कन्या अक्तूबर 91/5'3" हेतु राजस्थान निवासी उच्च शिक्षित, संस्कारित सरकारी अधिकारी/उच्च व्यवसाई/MNC में कार्यरत सुयोग्य वर चाहिए। जाति बन्धन नहीं।

आर्य समाज सुजानपुर का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर, सुजानपुर का वार्षिक उत्सव दिनांक 12 नवम्बर से 16 नवम्बर 2014 तक मनाया गया। जो कि ईश्वर की कृपा से हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इसकी अध्यक्षता प्रधान श्री वेद प्रकाश उप्पल ने की। इसमें आर्य जगत के वैदिक विद्वान '' श्री चैतन्यमुनि जी, माता सत्य प्रिया यति जी और आर्य प्रतिनिध सभा जालन्धर के भजनोपदेशक श्री अरूण वेदालंकार थे। महात्मा चैतन्य मुनि जी ने वैदिक सिद्धान्त एवं आत्मा और परमात्मा के प्रति जागरूक किया और कहा अगर हम अपने जीवन को वैदिक सिद्धान्त के अनुसार चलाएं तो हमारा जीवन सुखमय और आनन्दमय, सफल हो सकता है। 12 नवम्बर से 16 नवम्बर तक हवन यज्ञ होता रहा। यज्ञ के ब्रह्मा पंडित मोहन शास्त्री ने यज्ञ के प्रति लोगों की आस्था को जोड़ा। अन्तिम दिन यज्ञ की पूर्ण आहुति के पश्चात् महात्मा श्री चैतन्यमुनि जी ने यज्ञमानों को सुखमय जीवन का आशीर्वाद दिया। इस कार्यक्रम को सम्पन्न कराने में सहयोग दिया। कर्मठ मंत्री श्री विनोद महाजन, कोषाध्यक्ष श्री तिलक राज गुप्ता, मास्टर रेवती रमन, श्रीमती रीटा पुरी, श्रीमती निर्मल सोनी, उनकी पुत्रवधू अनीता सोनी, अध्यापिका श्रीमती आरती गुप्ता, सुनीला उप्पल, श्रीमती मीनाक्षी महाजन थे। मुख्य यज्ञमान श्रीमती एवं कर्नल प्रभात सिंह एवं श्री चन्दन महाजन जी थे। **-वेद प्रकाश**

पृष्ठ 4 का शेष- कुछ उपनिषदों.....

12. भारत के अनाथों की रक्षा की जाए। वह चाहते थे कि प्रत्येक नगर में अनाथालय हों ताकि ऋषि सन्तान भूख के मारे अन्य मतावलम्बी न हो जाए या मृत्यु के घाट न उतरें। आज उसी ऋषि की कृपा से अनेक अनाथालय, आर्य समाज, हिन्दू सभाएं, सनातनी भाईयों की ओर से स्थापित हो रही हैं जहां भारतीय अनाथों को धार्मिक, शिल्प तथा अंग्रेजी की शिक्षा देकर योग्य बनाया जा रहा है।

13. स्त्री जाति जिसे शूद्र समझा जाता था, उसका सम्मान बढ़ाकर उसे देवी की पदवी दी। उसको सुरक्षित करना वेदानुकूल बताया। स्त्री जाति को मनुष्य (अर्थात् पुरूष के) समान अधिकार देकर उसको दासत्व के बन्धन से छुटाया। अब उसी का परिणाम है कि प्रत्येक स्थान में, क्या आर्य समाजें और क्या सनातन सभाएं, पुत्री पाठशालाएं स्थापित कर रही हैं तथा आज कन्या गुरूकुल, महिला कालेज और कन्या महाविद्यालय स्थापित हो रहे हैं।

14. विधवाओं का संकट दूर करने के लिए उन्होंने प्राचीन धर्मशास्त्रों के प्रमाणों से सिद्ध किया कि अक्षत योनि लड़कियों का पुनर्विवाह हर प्रकार से उपयोगी है। आपत्ति काल में अन्य विधवाओं का विवाह हो जाना भी उचित है, बजाय इसके कि वह व्यभिचारिणी (वैश्या) बन कर धर्म कर्म को नष्ट करें।

15. गोरक्षा के लिए बलपूर्वक उन्होंने यत्न किया। ऋषि ने बताया कि भारत कृषि प्रधान देश है, अनाज की वृद्धि के लिए दूध, घृत, मलाई आदि श्रेष्ठ पदार्थों की प्राप्ति के लिए गोरक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है, अस्तु। स्वामी जी का उद्देश्य भली भांति मनुष्य मात्र की भलाई, संसार में शान्ति का फैलाना और भारतवर्ष को समृद्धिशाली तथा उन्नत बनाना था। वह चाहते थे कि भारत निवासी लोग भी जर्मनी आदि देशों में जाकर कला-कौशल आदि सीख कर भारत की दरिद्रता को दूर करें। दयानन्द ने सदियों के सोये हुए भारतवर्ष को जगाया और ऐसा बलपूर्वक धक्का लगाया कि भारत निवासी तमाम जातियों के भीतर हलचल पैदा कर दी। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान सबने करवट बदली, अपने धर्म ग्रन्थों की व्याख्या में परिवर्तन आरम्भ किया तथा उसे वेदानुकूल फिलासफी के मुताबिक सिद्ध करने लगे। जो दयानन्द से पहले धर्म में बुद्धि का दखल नहीं होने देते थे, वे सब अपने मजहब को साईंस, फिलासफी के अनुकूल सिद्ध करने लग गये।

अन्त में निवेदन है कि वह समय आ रहा है कि आगामी शताब्दी में हमारी सन्तानें देखेगी कि यूरोप, जर्मनी, अमेरिका आदि के विद्वान शताब्दी समारोह में आकर शरीक होगें और दयानन्द की जय मनाने के लिए इस यज्ञ में आकर आहुतियां डालेंगे। परमात्मा करे कि इस शताब्दी समारोह का यह आयोजन सफल हो और हम लोग ऋषि जीवन से प्रेरित होकर धार्मिक बल से अधिक दृढ़ हो जावें।

thearyasamaj.org

 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

वेदवाणी

हमारे अन्त:करण में सोम सरोवर बहने लगे

सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्धयामो वचोविदः।
सुमृळीको न आ विश॥

-ऋ० १।९१।११

विनय-हे प्रशान्तस्वरूप सोमदेव! तुम सब जगत के सार हो, जीवन-रस हो, फिर भी प्रकृति के विषयों में फंसा हुआ मनुष्य-संसार तुम्हें नहीं जानता; तुम कुछ हो यह कभी अनुभव ही नहीं करता, परन्तु हम लोग जिन्होंने तुम्हारी दया से तुम्हारी थोड़ी-बहुत अनुभूति का सुख पाया है, अपना यही कार्य समझते हैं कि पागलों की तरह सब जगह तुम्हारे गुण गाते फिरें-गाते फिरा करें। तुम्हारी भक्ति ने ही हमें "वचोविद्" भी बना दिया है-तुम्हारी भक्ति से हम वाणी की शक्ति को, रहस्य को जान गये हैं और इस शक्ति का प्रयोग करना भी जान गये हैं, अतः अपनी वाणियों से हम सदा तुम्हारा कीर्तन करते हैं, तुम्हारा यश गाते हैं, तुम्हारे स्वरूप का वर्णन करते हैं। जहां विषयग्रस्त मानवी हृदयों ने तुम्हें निकाल रखा है या जहां प्रकृतिवाद ने तुम्हारे लिए जगह नहीं रखी है, वहां भी तुम्हारा नाम फैलाते हैं, तुम्हें पहुंचाते हैं। मानो तुम्हारे सैनिक बनकर सांसारिक दृष्टि से तुम्हारा राज्य बढ़ाने का यत्न करते हैं, परन्तु हे देव! तुम इतना करो कि सात्त्विक सुख के दाता होते हुए सदा हमारे अन्दर प्रविष्ट रहो, बस हम यही चाहते हैं। हम तुच्छ लोग तुझे कहां से बढ़ा सकते हैं। हम तुझे फैलाते हैं, तुम्हारा राज्य फैलाते हैं-यह कहना कितनी धृष्टता का वचन है। हे सर्वशक्तिमान्! हे अनन्त, अपार! वास्तव में तुम्हीं जितना हमारे अन्दर प्रविष्ट होते हो उतना ही हममें तुम्हारा अवर्णनीय सात्त्विक सुख अनुभूत होता है और उस आनन्द में मस्त होकर हम तुम्हारे गुण गाते फिरते हैं। तब हमारे एक-एक अङ्ग से, हमारी एक-एक चेष्टा से, तुम्हारा प्रकाश होता है, अतः हमारी प्रार्थना तो यही है कि तुम हमारे अन्दर प्रविष्ट हो जाओ, तुम हममें आविष्ट हो जाओ। जितनी मात्रा में तुम हममें प्रविष्ट होओगे, उतनी ही मात्रा में हमारे द्वारा जगत् में तुम्हारा प्रचार व प्रकाश होगा। हे प्रभो! इस सात्त्विक सुख से हमें अनुप्राणित करते हुए इसमें आविष्ट हो जाओ।

साभार-वैदिक विनय

महर्षि दयानन्द मठ ढन्न मोहल्ला में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया जाएगा

महर्षि दयानन्द मठ वेद मन्दिर ढन्न मोहल्ला एवं जालन्धर आर्य समाज अड्डा होशियारपुर के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 21-12-2014 रविवार प्रात: 8:00 से 10:30 बजे तक महर्षि दयानन्द मठ ढन्न मोहल्ला में मनाया जा रहा है। प्रात: 8:00 बजे यज्ञ के द्वारा कार्यक्रम शुरू होगा। यज्ञ श्री सुरेश कुमार शास्त्री तथा श्री ओम प्रकाश शास्त्री द्वारा किया जाएगा। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रिं. डा. नरेश कुमार धीमान दोआबा कॉलेज जालन्धर तथा प्रिं. डा. बी.बी. शर्मा डी. ए. वी. कॉलेज जालन्धर होंगे। श्री दिनेश आर्य पथिक जी के मधुर भजन होंगे। यह कार्यक्रम श्री ओम प्रकाश अग्रवाल प्रधान महर्षि दयानन्द मठ ट्रस्ट की अध्यक्षता में होगा। आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि सपरिवार अधिक से अधिक संख्या में इस कार्यक्रम में पधार कर इसकी शोभा बढ़ाएं।

-कुन्दन लाल अग्रवाल प्रधान महर्षि दयानन्द मठ

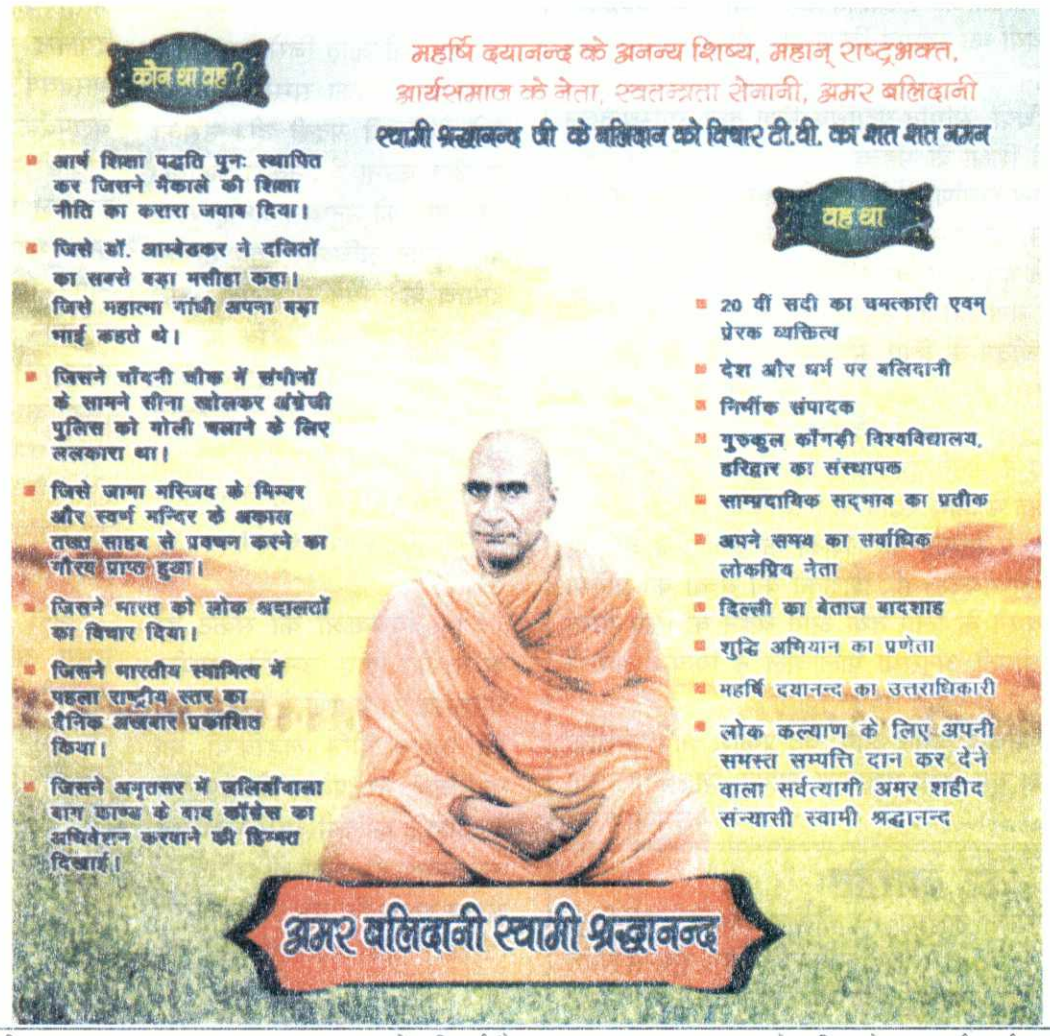

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।